





कार्यक्रम में शामिल कुलपति डा सुशील सोलोमन व अन्य।

## प्रोटीन का प्रमुख स्रोत हैं दलहनी फसलें

कानपुर, 13 जनवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौहोगिक विश्वविद्यालय कानपुर में कास्ट-एनसी परियोजना अंतगर्त दो दिवसीय दहलनी फसलों की गुणवत्ता युक्त बीज विषय पर पीजी छाल-छाताओं के लिए दो दिवीसय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सीएसए के कुलपित डा. सुशील सोलोमन ने कहाकि दलहनी फसलें प्रोटीन का प्रमुख स्रोत है। संतुलित भोजन का आधार होते हुए वातावरणीय जैविक नाइट्रोजन को फिक्स करके मिट्टी की उर्वरा शिक्त को बढ़ाने की विशेषता इसे बाकी फसलों से अलग करती है। भारत टलहन फसलों का सबसे बड़ा उपभोक्ता वाला देश है। भारत में लगभग 23 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में दलहन की फसलों का उत्पादक किया जाता है तथा 25.23 मिलियन टन दाल का उत्पादन होता है। आईआईपीआर के पूर्व निदेशक डा. मसूद अली ने गुणवत्तायुक्त दलहन के बीज विषय पर विस्तृत

के बीज विषय पर विस्तृत जानकारियां दी। उन्होंने कहाकि भूमि का चयन बीज उत्पादन के लिए पहला और सबसे महत्वपूर्ण

कार्य है। स्वस्थ बीज निश्चित रूप से गुणवत्ता के बीज का उत्पादन करेगा। आईसीआईआर के पूर्व महानिदेशक डा. आर.पी. कटियार ने भारत में दलहन का वर्तमान परिदृश्य परिचर्चा की। डा. कटियार ने कहािक 1961 में प्रतिदिन प्रति व्यक्ति दालों का उपलब्धता 69 ग्राम दाल थी जो घटकर 42 ग्राम रह गयी है। मानकों के मुताबिक रोज व्यक्ति को कम से कम 50 ग्राम दाल का सेवन करना चाहिये। प्रधान तैज्ञानिक डा. प्रस्नु वर्मा, डा. एच.जी. प्रकाश, डा. एन. के. गीतम आदि ने दलहनी फसलों के साथ ही प्रशिक्षण कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। इस दौरान संयुक्त निदेशक शोध डा. डी.पी. सिंह, 'कुलस्विव डा. कृपा शंकर, डा. धूम सिंह, डा.सी.एल. मीर्या, डा. आर.यादव, सम्मति अधिकारी मानवेद्र सिंह, मीडिया प्रभारी डा. खलील खान आदि मौजूद रहे। संचालन डा. रिंग सिंह ने किया।